स्वामी विवेकानन्द

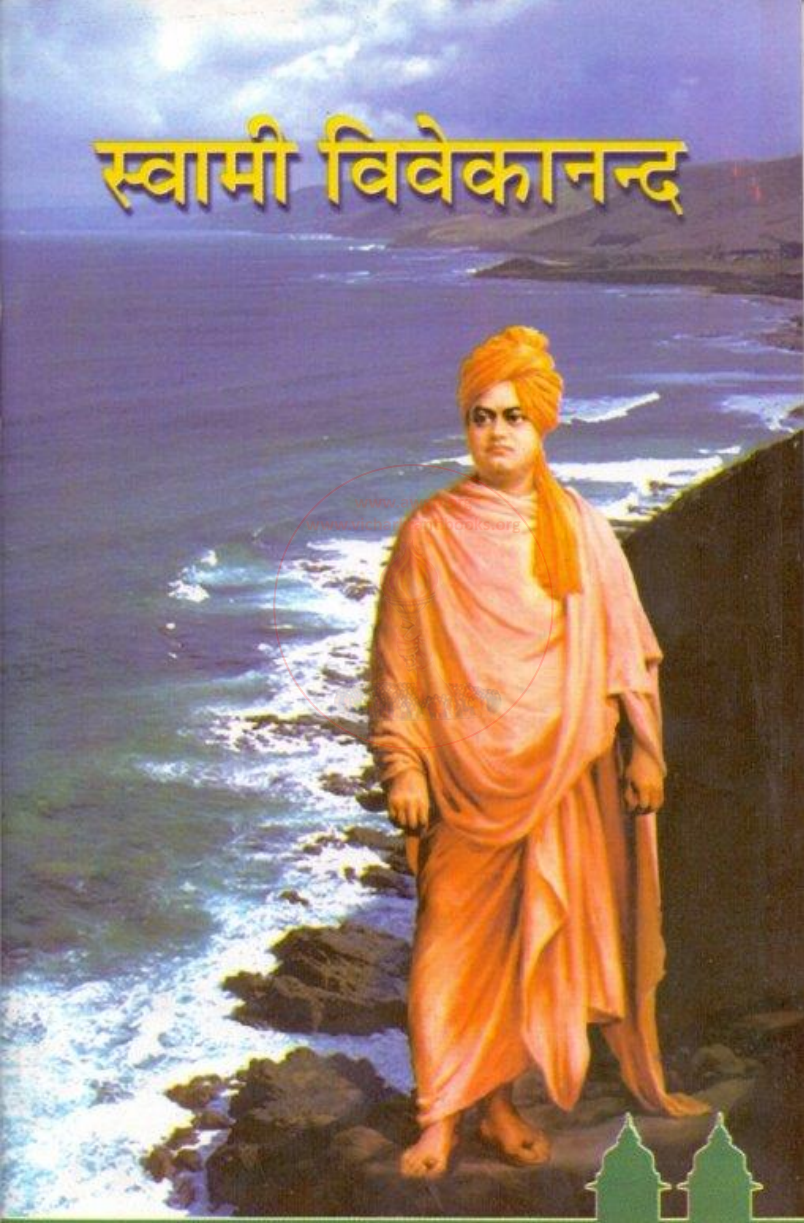

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

धर्म और संस्कृति के महान उन्नायक

स्वामी विवेकानंद

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१५ मूल्य : ७.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक:
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

लेखक
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org



मूल्य : ७.०० रुपये

मुद्रक
युग निर्माण योजना प्रेस
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-३

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म और संस्कृति के महान उन्नायक

स्वामी विवेकानंद

कलकत्ता नगर में महामारी (प्लेग) का प्रकोप था। प्रतिदिन सैंकड़ों व्यक्तियों पर उसका आक्रमण होता था। हालत बिगड़ती देखकर सरकार ने स्थिति का नियंत्रण करने के लिए कड़े नियम बनाए। पर जब नगर निवासी अनुशासन की कमी से उनका पालन करने में ढीलढाल करने लगे तो शहर के भीतर और चारों तरफ फौज तैनात कर दी गई। इससे नगरवासियों में बड़ा आतंक फैल गया और उपद्रव हो जाने की आशंका होने लगी।

स्वामी विवेकानंद उस समय विदेशों में हिन्दू धर्म की ध्वजा फहराकर और भारतवर्ष का दौरा करके कलकत्ता आए ही थे। वे अपने देशी-विदेशी सहकारियों के साथ बेलूड़ में रामकृष्ण परमहंस मठ की स्थापना की योजना में संलग्न थे। लोगों पर इस घोर विपत्ति को आया देखकर वे सब काम छोड़कर कर्मक्षेत्र में कूद पड़े और बीमारों की चिकित्सा तथा सफाई को एक बड़ी योजना बना डाली।

गुरु-भाई ने पूछा—स्वामीजी? इतनी बड़ी योजना के लिए 'फंड' कहाँ से आएगा?

स्वामीजी ने तुरंत उत्तर दिया-आवश्यकता पड़ेगी तो इस मठ के लिए जो जमीन खरीदी है उसे बेच डालेंगे। सच्चा मठ तो सेवा कार्य ही है। हमें तो सदैव संन्यासियों के नियमानुसार भिक्षा माँगकर खाने तथा पेड़ के नीचे निवास करने को तैयार रहना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सेवा-व्रत को इतना उच्च स्थान देने वाली स्वामी विवेकानंद (जन्म १२ जनवरी १८६३) कलकत्ता के एक मध्यम श्रेणी के बंगाली परिवार में उत्पन्न हुए थे। उस समय भारत में तीव्र वेग से अँग्रेजी राज्य और ईसाई संस्कृति का प्रसार हो रहा था। इसके परिणामस्वरूप देश में उच्चवर्ग का विश्वास अपने धर्म और सभ्यता पर से हिल गया था और ऐसा प्रतीत होने लगा था कि कुछ ही समय में इस देश में ईसाइयत की पताका उड़ने लगेगी। पर उसी समय देश में ऐसे कितने ही महामानवों का आविर्भाव हुआ जिन्होंने इस प्रबल धारा को अपने प्रभावों से दूरी तरफ मोड़ दिया। उन्होंने हिन्दू-धर्म के सच्चे स्वरूप को संसार के सामने रखा और लोगों को विश्वास दिला दिया कि आत्मोन्नति और कल्याण की दृष्टि से हिन्दू-धर्म से बढ़कर धार्मिक सिद्धांत संसार में और कहीं नहीं हैं। इन महामानवों में स्वामी विवेकानंद का स्थान बहुत ऊँचा है।

ईश्वर का साक्षात्कार करने की धुन

बाल्यावस्था में स्वामी विवेकानंद को, जिनका नाम उस समय नरेन्द्र था, ऐसे ही वातावरण में रहना पड़ा था और इसके प्रभाव से वे बहुत छोटी आयु में ही ब्रह्मसमाज में जाने लगे थे। यह संस्था उच्चवर्ग के नवशिक्षित लोगों द्वारा ही स्थापित की गई थी और हिन्दू-धर्म की कितनी ही मान्यताओं, जैसे अनेक देवी-देवता, मूर्ति-पूजा, अवतारवाद, गुरुवाद आदि के विरुद्ध उसने आंदोलन उठाया था। वे लोग जात-पाँत का निराकरण, सब जातियों की समानता, स्त्री-शिक्षा, बड़ी उम्र में विवाह आदि अनेक 'सुधारों' के लिए भी जोरों से प्रयत्न करने लगे।

नरेन्द्र के विचार भी उस समय बहुत कुछ इनसे मिलते-जुलते थे, इसलिए प्रायः उनकी सभाओं में जाने लगे। ब्रह्म-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समाज में ध्यान का अभ्यास करने पर विशेष जोर दिया जाता था। पर जब ध्यान करने और नियमित रूप से समाज की प्रार्थना में सम्मिलित होने पर 'ईश्वर के साक्षात्कार' के संबंध में कोई प्रगति न हुई तो उनका विश्वास ब्रह्मसमाज से हटने लगा और एक दिन उन्होंने अकस्मात समाज के अध्यक्ष महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर के पास जाकर प्रश्न किया—"महाशय आपने ब्रह्म को देखा है?" एक छोटे लड़के के मुँह से ऐसा प्रश्न सुनकर महर्षि चौंक पड़े और बोले—"लड़के, तेरी आँखें तो योगी की तरह हैं।" पर नरेन्द्रनाथ को इस उत्तर से संतोष नहीं हुआ और वे अपने प्रश्न का उत्तर जानने के लिए अन्य धार्मिक समझे जाने लोगों से यही चर्चा करने लगे।

नरेन्द्र को इस प्रकार ईश्वर की खोज में चारों ओर भटकते देखकर एक दिन उनके काका ने कहा कि, "तुझे यदि वास्तव में ईश्वर को प्राप्त करना हो तो ब्रह्म-समाज आदि को छोड़कर दक्षिणेश्वर में ठाकुर रामकृष्ण परमहंस के पास जा।" कुछ ही दिन बाद श्री रामकृष्ण पड़ोस में ही एक सज्जन के यहाँ पधारे। नरेन्द्र को भी संगीत कार्यक्रम में भाग लेने के लिए वहाँ बुलाया गया। परमहंस जी इस अपरिचित किशोर को देखकर एकाएक उसकी तरफ आकर्षित हो गए और उसका परिचय प्राप्त करके एक दिन उन्होंने उसे दक्षिणेश्वर आने को कहा।

जब नरेन्द्र दक्षिणेश्वर पहुँचे तो उन्हें प्रथम बार अच्छी तरह देखने पर परमहंस जी के मन में जो भाव उत्पन्न हुए थे उसकी चर्चा करते हुए उन्होंने एक बार कहा था—"मैंने देखा कि उसका अपने शरीर की तरफ कुछ भी ध्यान नहीं है। माथे के बाल और पोशाक में किसी भी प्रकार की दिखावट नहीं थी। अन्य साधारण लोगों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तरह उसकी दृष्टि बाहरी वस्तुओं की तरफ नहीं थी। उसकी आँखों को देखकर मुझे जान पड़ा कि उसके मन के एक बड़े भाग को मानों किसी ने भीतर की तरफ खींच रखा है।''

श्री रामकृष्ण से भी नरेन्द्र ने वही प्रश्न किया कि ''क्या आपने ईश्वर को देखा है ?'' उन्होंने कहा—''हाँ देखा है। जिस प्रकार मैं तुम सबको देखता हूँ और तुम्हारे साथ बात करता हूँ उसी प्रकार ईश्वर को भी देखा जा सकता है और उसके साथ बातें की जा सकती हैं। पर इसके लिए प्रयत्न कौन करता है ? लोग स्त्री, पुत्र, संपत्ति के लिए हाय-हाय करते फिरते हैं, उनके वियोग में रोते हैं, पर ईश्वर नहीं मिल पाया, इसके लिए कौन रोता है ? ईश्वर की प्राप्ति नहीं हुई इसके लिए यदि मनुष्य उसी प्रकार व्याकुल हो जाए जैसे स्त्री-पुत्र आदि के लिए हो जाता है, तो वह अवश्य ईश्वर के दर्शन कर सकेगा।''

परमहंस जी का उत्तर सुनकर नरेन्द्र के मन में यह भाव आया कि ये अन्य धर्मोपदेशकों की तरह पुस्तकें पढ़कर ऐसी बातें नहीं कर रहे हैं वरन इन्होंने सर्वस्व त्यागकर, संपूर्ण मन से ईश्वर की आराधना करके अपने अंत:प्रदेश में उसे जैसा देखा है, वैसा ही वे कह रहे हैं। हो सकता है कि विदेशी दार्शनिकों की व्याख्या के अनुसार ये अर्ध-पागलों की श्रेणी में आते हों, तो भी ये महापवित्र और महात्यागी हैं और इसीलिए मानव-हृदय की श्रद्धा, भक्ति, पूजा और सम्मान के सच्चे अधिकारी हैं।

त्याग भाव

इसके पश्चात नरेन्द्र का संपर्क परमहंस देव से क्रमश: बढ़ता गया और इससे आध्यात्मिक क्षेत्र में उनकी प्रगति होती गई। इस समय की एक घटना का वर्णन करते हुए एक लेखक ने बतलाया है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि एक बार परमहंस देव ने नरेन्द्र को एकांत में बुलाकर कहा—''देखो अति कठोर तपस्या के प्रभाव से मुझे कितने ही समय से अणिमा आदि सिद्धियाँ प्राप्त हो चुकी हैं। पर मेरे जैसे मनुष्य के लिए, जिसे पहने हुए वस्त्र का भी ध्यान नहीं रहता, उन सबका उपयोग करने का अवसर ही कहाँ मिल सकता है? इसलिए मैं चाहता हूँ कि माँ (काली देवी) से पूछकर उन सबको तुझे सौंप दूँ, क्योंकि मुझे दिखाई पड़ रहा है कि आगे चलकर तुझे माँ का बहुत काम करना है। इन सब शक्तियों का तेरे भीतर संचार हो जाए तो समय पड़ने पर उनका उपयोग हो सकता है, कहो, तुम्हारा क्या विचार है?''

नरेन्द्र को यद्यपि अब तक के अनुभवों से परमहंस देव की दिव्य शक्तियों पर बहुत कुछ विश्वास हो चुका था, तो भी उन्होंने कुछ देर विचार करके कहा--''महाराज, इन सब सिद्धियों से मुझे ईश्वर-प्राप्ति में सहायता मिल सकेगी?''

श्री रामकृष्ण—''इस संबंध में तो संभवतः उनसे कोई सहायता प्राप्त नहीं हो सकेगी। तो भी ईश्वर-प्राप्ति के पश्चात जब उनका कार्य करने में प्रवृत्त होगा तो ये सब बहुत उपयोगी होंगी।''

नरेन्द्र—''तो महाराज! इन सब सिद्धियों की मुझे क्या आवश्यकता है? पहले ईश्वर-दर्शन हो जाए, फिर देखा जाएगा कि इन सिद्धियों को ग्रहण किया जाए या नहीं? अत्यंत चमत्कारिक विभूतियों और सिद्धियों को अगर अभी से लेकर ईश्वर-प्राप्ति के ध्येय को भुला दिया जाए और स्वार्थ की प्रेरणा से उनका अनुचित प्रयोग किया जाए, तो यह बड़ी हानिकर बात होगी।'' इस उत्तर को सुनकर परमहंस देव बहुत संतुष्ट हुए और उन्होंने समझ लिया कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नरेन्द्र वास्तव में त्याग-भावना वाला है और वह सेवा-मार्ग में बहुत अधिक प्रगति कर सकेगा।

काली माता से विवेक का वरदान

इसी प्रकार की दूसरी घटना उस समय हुई जब सन् १८८४ में नरेन्द्र के पिता श्री विश्वनाथ दत्त का देहांत हो गया और पारिवारिक झगड़ों के कारण घर की आर्थिक स्थिति अत्यंत शोचनीय हो गई। किसी दिन तो घर में चूल्हा भी नहीं जल पाता था और सबको भूखा ही रह जाना पड़ता था। नरेन्द्र उस समय तक यद्यपि एम.ए. में पढ़ रहे थे, पर अध्यात्म की तरफ मनोवृत्ति होने के कारण रोजगार की तरफ कुछ ध्यान न देते थे। पर अब इस आकस्मिक विपत्ति के आ जाने से उनका ध्यान कोई काम करने की तरफ गया और बराबर सरकारी और गैर सरकारी कार्यालयों में किसी छोटी-मोटी नौकरी के लिए चक्कर लगाने लगे। पर कई महीने बीत जाने पर भी जब सफलता न मिली और परिवार वालों का कष्ट बहुत बढ़ गया तो उनको परमहंस देव का ख्याल आया कि उनके आशीर्वाद से इस विपत्ति से छुटकारा पाया जाए।

जब नरेन्द्र ने यह समस्या गुरुदेव के सम्मुख रखी और उनसे काली-माता के सम्मुख इसकी प्रार्थना करने का आग्रह किया, तो उन्होंने कहा—"भैया, मुझसे तो ऐसी बात कही नहीं जाएगी। तू ही क्यों नहीं कहता? तू माँ को नहीं मानता, इसीलिए तो यह सारा बखेड़ा खड़ा हुआ है।"

परमहंस देव के समझाने पर नरेन्द्र मंदिर के भीतर पहुँचे और उन्होंने देखा कि वास्तव में वहाँ अनंत प्रेम की वर्षा करती हुई माता का चिन्मय स्वरूप उपस्थित है। भक्ति और प्रेम से उनका हृदय भर गया और बार-बार प्रणाम करके कहने लगे—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

''माँ, विवेक दो, वैराग्य दो, भक्ति दो, और ऐसा करो जिससे नित्य तुम्हारा दर्शन होता रहे।'' जब वे बाहर आए तो परमहंस जी ने पूछा—''क्यों, माँ के पास जाकर आर्थिक तंगी को दूर करने की प्रार्थना की?'' उनके इस प्रश्न से चौंक कर नरेन्द्र ने कहा—''नहीं, उसे तो मैं भूल ही गया अब क्या होगा?'' परमहंस देव ने कहा—''जा जा-फिर चला जा। वहाँ जाकर माँ को सब बात बतला दे, वे अवश्य सब व्यवस्था कर देंगी।''

नरेन्द्र फिर मंदिर में गए पर भीतर पहुँचते ही फिर सब बात भूल गए और बार-बार ज्ञान और भक्ति के लिए प्रार्थना करके बाहर ही निकल आए। तीसरी बार भी ऐसा ही हुआ और तब वे परमहंस देव को पकड़ कर बैठ गए कि 'यह सब आपकी ही लीला है, अब मेरे परिवार के निर्वाह की व्यवस्था आप ही कीजिए। अंत में परमहंस जी को कहना पड़ा कि 'जा' उनको रोटी और मोटे कपड़े की कमी नहीं रहेगी।' हुआ भी ऐसा ही।

इस घटना से मालूम होता है कि जिन व्यक्तियों का दृष्टिकोण आध्यात्मिक होता है, वह कठिनाई में पड़ने पर भी ईश्वर से अपने स्वार्थ-संबंधी कोई याचना नहीं करते। उनकी दृष्टि में इन क्षणभंगुर वस्तुओं का मूल्य ज्ञान और भक्ति जैसे संसार-सागर से पार लगाने वाले तत्त्वों की अपेक्षा अत्यंत न्यून होता है। यही कारण है कि घोर आर्थिक कष्ट में फँसे होने पर भी वे काली माँ के सामने वैसी तुच्छ बात को न कह सके और ज्ञान और भक्ति का वरदान माँगकर ही चले आए। हमको इसकी तुलना आजकल के उन साधकों से करनी चाहिए जो कोई साधारण-सा अनुष्ठान आरंभ करते ही बड़ी-बड़ी कामनाओं की सिद्धि का स्वप्न देखा करते हैं, और जब अपनी अयोग्यता के कारण कुछ प्रगति नहीं होती, तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देवता को झूँठा बतलाते हैं। इससे हम समझ सकते हैं कि वर्तमान समय में अध्यात्म मार्ग से लोगों की श्रद्धा हटते जाने का कारण क्या है ?

जन सेवा के लिए संन्यास

इसके कुछ समय पश्चात परमहंस देव का स्वास्थ्य अधिक बोलने के कारण बिगड़ गया और उनकी सेवा का भार नरेन्द्र ने अपने ही ऊपर लिया। इसके लिए उन्होंने अपने घर बार को एक प्रकार से त्याग ही दिया और पूरा समय परमहंस देव की परिचर्या और उनके अन्य शिष्यों की देखभाल में ही लगाने लगे। अंत में १६ अगस्त १८८६ को परमहंस देव का देहांत हो गया, तब उनके समस्त शिष्यों और आश्रम की व्यवस्था का भार नरेन्द्र पर आ पड़ा। उन्होंने कुछ गृहस्थ भक्तों की सहायता से एक पुराना खंडहर जैसा मकान किराए पर लिया और पाँच-सात नवयुवक वहीं रहकर आत्म-साधना में संलग्न रहने लगे। नरेन्द्र ने अपना उदाहरण उपस्थित करके सबको यही प्रेरणा दी कि—जब हम संन्यासी हो चुके हैं तो हमको भोजन-वस्त्र की सुविधा-असुविधा का ध्यान छोड़ देना चाहिए। उस समय वास्तव में स्थिति भी ऐसी आ गई थी कि आश्रम में खाने को कुछ भी सामग्री नहीं रहती और भिक्षा के द्वारा जो थोड़ा-बहुत चावल मिल जाता उसी को उबालकर सब बाँटकर काम चला लेते। साथ में साग-भाजी की तो क्या बात कभी-कभी नमक भी नहीं मिलता था। पर इससे किसी के मुख पर असंतोष का कोई चिन्ह न दिखाई देता था। सूखे भात, नमक और बेलपत्र पर इन लोगों ने महीनों तक निर्वाह किया। नरेन्द्र बराबर सबका उत्साह कायम रखते थे और समझाते रहते थे कि यदि हमको संन्यासी रहकर संसार की कुछ सेवा करनी है तो इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकार के अभावों और कठिनाइयों को खुशी से सहने को तैयार रहना चाहिए।

देश दशा का अनुभव

सन् १८८८ में स्वामीजी (नरेन्द्र) देश-भ्रमण के लिए निकले। उस समय उन्होंने अपने पास एक भी पैसा न लिया और न किसी तरह की सामग्री। केवल भगवान के भरोसे वे आश्रम से निकल पड़े और वहाँ से वृंदावन होकर हाथरस पहुँचे। वहाँ का स्टेशन मास्टर शरदचंद्र उनका भक्त बन गया और बड़े आग्रह के साथ उन्हें अपने यहाँ ठहराया। एक दिन उसने पूछा—"स्वामीजी! आप उदास क्यों जान पड़ते हैं?" स्वामीजी ने उत्तर दिया—"बेटा! मुझे एक महान कार्य पूरा करना है, पर अपने साधनों की अल्पता देखकर मैं निराश हो जाता हूँ। मेरे गुरु का आदेश है कि हमारी मातृभूमि का पुनरुत्थान किया जाए। भारतवर्ष से सच्ची आध्यात्मिकता लुप्त हो गई है और भुखमरी का भूत सर्वत्र घूम रहा है। इसलिए भारतवर्ष को शक्तिशाली बनाकर अपनी आध्यात्मिकता द्वारा विश्व को विजय करना चाहिए।"

कुछ समय बाद स्वामीजी हाथरस से चल दिए। पर शरदचंद्र ने उनको न छोड़ा। उसने नौकरी से इस्तीफा दे दिया और साधु बनकर इनके साथ ही चल दिया। स्वामीजी हिमालय के विभिन्न स्थानों में भ्रमण करने लगे जहाँ शरदचंद्र बीमार पड़ गया। तब स्वामीजी ने उसकी इतनी अधिक सेवा की जितनी कोई नौकर नहीं कर सकता। फिर हरिद्वार पहुँचकर वे स्वयं बीमार हो गए और पाँच महिने की चिकित्सा तथा सेवा सुश्रुषा से बड़ी कठिनाई से नीरोग हुए। इस बीच में खबर आई कि कलकत्ते का आश्रम आर्थिक संकट के कारण बड़ी बुरी हालत में है। स्वामीजी शीघ्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही वहाँ पहुँचे और कुछ व्यवस्था करके फिर भारतवर्ष की यात्रा पूर्ण करने को निकल पड़े।

इस यात्रा में स्वामीजी को बड़े अनुभव हुए और उन्होंने विभिन्न भारतीय वर्गों की अच्छी जानकारी प्राप्त की। राजस्थान भ्रमण करने के लिए वे पहले अलवर पहुँचे और वहाँ दो-तीन दिन में ही उनकी ऐसी ख्याति हो गई कि हिन्दू ही नहीं, मुसलमानों के समूह भी दर्शनार्थ आने लगे। अंत में वहाँ के महाराज ने उनको बुलाया और सत्संग करके अपने को धन्य माना।

अलवर में रहते समय एक गरीब बुढ़िया ने उनको बड़े प्रेम से रोटी खिलाई थी। स्वामीजी उसे कभी नहीं भूले। जब अमरीका से विश्व-विजयी बनकर लौटे और अलवर जाने का अवसर आया तो उस बुढ़िया के घर स्वयं ही पहुँचे और उसके हाथ से मोटी रोटी और साग बनवाकर खाया। चलते समय उसके घर वालों को चुपचाप सौ रुपए सहायतार्थ दे आए।

इसी प्रकार खेतड़ी के पास एक गाँव में वे तीन दिन टिक गए। वहाँ के निवासी उनसे प्रश्नोत्तर तो रात-दिन करते रहे पर किसी ने भोजन तो क्या पानी के लिए भी नहीं पूछा। यह देखकर एक गरीब अछूत को बड़ी व्यथा हुई। रात्रि में सबके चले जाने पर वह स्वामीजी के पास पहुँचकर अपना मनोभाव प्रकट करने लगा। स्वामीजी ने जब उससे रोटी लाने के लिए कहा तो वह अत्यंत डरकर कहने लगा कि अगर मैं आपको रोटी खिलाकर भ्रष्ट कर दूँ तो इस बात को प्रकट होने पर मुझे गाँव से निकाल दिया जाएगा। स्वामीजी के आश्वासन देने पर वह तीन-चार रोटियाँ दे गया और स्वामीजी ने उनमें अमृत के समान स्वाद पाया। फिर जब वे खेतड़ी के राजा के गुरु बनकर राजमहल में ठहरे तो उन्होंने इस घटना का जिक्र किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राजा साहब ने अछूत को बुलवाया। पहले तो वह बहुत घबड़ाया और क्षमा माँगने लगा, पर राजा ने उसकी बड़ी प्रशंसा की और उसे पुरस्कृत करके उसकी गरीबी को दूर कर दिया।

लिम्बड़ी (काठियाबाड़) में स्वामीजी संन्यासियों के एक आश्रम में ठहर गए जो वास्तव में वाममार्गी थे। उन्होंने स्वामीजी को भी अपने 'भैरवी चक्र' में शामिल होने को कहा। जब इन्होंने इस प्रकार के व्यभिचार-कर्म से घृणा प्रकट की तो उनको एक कोठरी में बंद कर दिया और मारने का भय दिखाने लगे। स्वामीजी बड़ी कठिनाई से उनके फंदे से छूटे और उनको भ्रष्ट कर्म करने के अपराध में गिरफ्तार कराया। इस घटना से स्वामीजी के ब्रह्मचर्य-व्रत की दृढ़ता का परिचय मिलता है।

www.awgp.org

मैसूर में भी महाराज ने उनका बड़ा सत्कार किया। एक दिन वहाँ के दीवान ने उनको कोई भेंट देने का बड़ा आग्रह किया और चैक-बुक देकर अपने सेक्रेटरी को साथ में भेज दिया कि नगर की सबसे बड़ी दुकान में स्वामीजी जो कुछ पसंद करें वही दिला दिया जाए। स्वामीजी ने सब कुछ देखा-भाला पर अंत में बारह आने की कोई छोटी-सी चीज लेकर दीवान साहब के आग्रह की रक्षा कर दी। इस प्रकार उन्होंने अपने व्यवहार से यह सिद्ध कर दिखाया कि सच्चा संन्यासी सांसारिक प्रलोभनों से अपने को दूर ही रखता है।

देशोद्धार का संकल्प

अब स्वामीजी भारत-भ्रमण करते हुए देश की अंतिम सीमा पर पहुँच चुके थे। वे रामेश्वर होकर कन्याकुमारी पहुँचे। वहाँ भारतभूमि के अंतिम छोर की शोभा देखते हुए उन्होंने थोड़ी ही दूर पर समुद्र के बीच निकली एक बड़ी चट्टान को देखा। स्वामीजी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तैरकर वहाँ पहुँचे और शिला पर बैठकर कई घंटे तक अपने देश की वर्तमान दशा पर विचार करते रहे। अंत में उनके मुख से स्वत: ही ये उद्‌गार निकले—

''हम लाखों साधु संन्यासी लोगों के लिए क्या कर रहे हैं? अध्यात्म का उपदेश! पर यह तो पागलपन है। भगवान श्रीरामकृष्ण ने ठीक कहा था कि भूखे मरते हुए को धर्म का उपदेश व्यर्थ है। जहाँ लाखों को खाने को नहीं मिलता वहाँ वे धार्मिक कैसे बन सकते हैं? इसलिए पहले देशवासियों की आर्थिक अवस्था सुधारने के लिए वैसी ही शिक्षा देनी चाहिए। उसके बाद वे स्वयं अपनी समस्याओं को सुलझा लेंगे। पर इस काम के लिए पहले तो कार्यकर्ता चाहिए और फिर धन की आवश्यकता है। मैं भिखारी संन्यासी इसको कैसे दूर कर सकता हूँ? पर कोई बात नहीं, गुरु की कृपा से मैं इसे करूँगा अवश्य। भारत के एक-एक नगर से ऐसे व्यक्ति इकट्‌ठे होंगे जिनका हृदय लोगों की दशा सुधारने के लिए तड़प रहा होगा—जो इसके लिए जीवन अर्पण करने को तैयार होंगे। पर पैसा! इस कार्य का भार लेकर मैं राजा से लेकर रंक तक के पास घूम चुका हूँ। पर सर्वत्र सहानुभूति के शब्द ही मिलते हैं। इसलिए मैं इस कंगाल देश में किसी का सहारा न लेकर समुद्र पार पश्चिमी देशों में जाऊँगा और अपनी विद्या-बुद्धि के प्रभाव से पैसा प्राप्त करूँगा। फिर स्वदेश आकर लोगों के उद्धार की योजना पूरी करूँगा या इसी प्रयत्न में प्राण दे दूँगा।''

मद्रास पहुँचने पर स्वामीजी के पास अनेक जिज्ञासुओं की भीड़ रहने लगी। एक हिन्दू 'पंडित' आया जिसका आचार-विचार पूरी तरह से अंग्रेजी हो चुका था। उसने वेदों को ऋषियों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अर्थहीन लेख बतलाया और कहा—''स्वामीजी! संध्या वंदन का समय नहीं मिलता, इसलिए उसे छोड़ दिया जाए तो कोई हानि है?'' भारतीय संस्कृति के प्रति ऐसी अवज्ञापूर्ण बातें सुनकर स्वामीजी एकदम आवेश में आए और गरजकर कहने लगे—''क्या कहा! जिन प्राचीन महामानवों की बुद्धि के घोड़े चलते नहीं वरन उड़ते थे, जिनकी महिमा पर जरा-सा भी विचार करने पर तुम एक क्षुद्र कीड़े की तरह जान पड़ते हो, उन सब ऋषियों के पास तो इस कार्य के लिए समय था, और मेरे साहब! आपके पास समय नहीं है। तुमने अंग्रेजी के अक्षर सीखकर कुछ पुस्तकें पढ़ लीं तो उन्हीं से तुम्हारा दिमाग फिर गया! उन ऋषियों के विज्ञान की तुमने परीक्षा की है? तुमने कभी वेदों को पढ़ने का कष्ट उठाया है? उनमें समझने की शक्ति हो तो फिर उस संबंध में बातें करो।''

प्रथम विदेश यात्रा

स्वामीजी संपूर्ण देश का भ्रमण करके और यहाँ के छोटे-बड़े सैंकड़ों प्रसिद्ध व्यक्तियों से वार्तालाप करके इसी निश्चय पर पहुँचे कि एक बार देश से बाहर जाकर हिंदू धर्म के उच्च सिद्धांतों का प्रचार किया जाए जिससे एक ओर तो विदेशों के अध्यात्म-प्रेमी व्यक्ति भारतवर्ष की तरफ आकर्षित हों और दूसरी ओर जो हमारे शिक्षित देश-बंधु विदेशी सभ्यता से चकाचौंध होकर अपनी प्राचीन संस्कृति से विमुख हो जाते हैं उनकी भी आँखें खुलें। इसी अवसर पर मद्रास में उनको यह सूचना मिली कि अमरीका के शिकागो नगर में एक 'सर्व धर्म-सभा' होने वाली है और उसमें अभी तक ''सनातन हिंदू-धर्म'' की ओर से कोई प्रतिनिधि नहीं गया। स्वामीजी को अपनी अंतरात्मा से यह प्रेरणा हुई कि इस अवसर पर उनको अन्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म वालों के समक्ष हिंदू धर्म के झंडे को ऊँचा करना चाहिए। उनके सभी मित्रों और शुभचिंतकों ने भी इस मत का समर्थन किया और ३१ मई १८९३ को विदेश जाने का का निश्चय हो गया।

जिस समय स्वामीजी यात्रा के लिए धन की व्यवस्था पर विचार कर रहे थे उसी समय खेतड़ी के दीवान जगमोहन लाल उनकी सेवा में उपस्थित हुए। उन्होंने कहा कि "आपने दो वर्ष पहले राजा साहब को पुत्र होने का आशीर्वाद दिया था वह सफल हो गया है और उस आनंदोत्सव में महाराज ने आपसे पधारने की प्रार्थना की है।" स्वामीजी खेतड़ी पहुँचे और नवजात शिशु को आशीर्वाद देकर चल दिए। खेतड़ी नरेश ने अपने दीवान को भी उनके साथ भेजा और यात्रा का पूरा प्रबंध और मार्गव्यय आदि की व्यवस्था करने की ताकीद कर दी।

खेतड़ी नरेश स्वामीजी को विदा करने जयपुर स्टेशन तक आए। चलते-चलते उन्होंने पूछा—"आप अमरीका पहुँचकर किस नाम से प्रचार-कार्य करेंगे?" स्वामीजी ने उत्तर दिया कि—"अभी तक तो मैंने कोई पक्का नाम रखा नहीं है। कभी सच्चिदानंद, कभी अन्य कोई नाम रखकर फिरता रहा हूँ।" उसी समय राजा साहब ने कहा—"स्वामीजी! आपको 'विवेकानंद' नाम कैसा लगता है?" उस दिन से ही परमहंस देव के शिष्य 'नरेन्द्र' स्वामी विवेकानंद के ही नाम से प्रसिद्ध हुए।

जयपुर से बंबई जाते हुए आबूरोड स्टेशन पर स्वामीजी की भेंट अकस्मात अपने एक गुरुभाई तुरीयानंद से हो गई। उनसे बातें करते हुए स्वामीजी ने कहा—"हरिभाई, मैं तुम्हारे धर्मकर्म को अधिक नहीं समझता, पर मेरा हृदय अब बहुत विशाल हो गया है और मुझे सामान्य लोगों के दुःखों का बड़ा अनुभव होने लगा है। मैं सत्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहता हूँ कि लोगों को कष्ट पाते देखकर मेरा हृदय बड़ा व्याकुल होता है।'' यह कहते-कहते स्वामीजी की आँखों से आँसू गिरने लगे। स्वामी तुरीयानंद ने इस प्रसंग का वर्णन करते हुए कहा था— ''क्या यह भावना और शब्द बुद्धदेव के से नहीं है? मैं दीपक के प्रकाश की तरह स्पष्ट देख रहा था कि देशवासियों के दुःखों से स्वामीजी का हृदय धधक रहा था और वे इस दुर्व्यवस्था का सुधार करने के लिए किसी रामबाण रसायन की खोज कर रहे थे?''

३१ मई को स्वामीजी बंबई के बंदरगाह पर अमरीका जाने वाले जहाज में सवार हो गए। उस समय भगवा रंग का रेशमी लबादा, माथे पर उसी रंग का फेंटा बाँधकर किसी राजा के समान शोभा देने लगे। इन सबकी व्यवस्था खेतड़ी के दीवान जगमोहनलाल ने ही की थी। जगमोहनलाल और मद्रास के एक भक्त अलसिंह पेरुमल उन्हें जहाज के दरवाजे तक पहुँचाने को आए। थोड़ी देर बाद जहाज के छूटने का घंटा बजा। दोनों भक्तों ने स्वामीजी के पैर पकड़कर आँसू भरे नेत्रों से विदा ली और जहाज चल दिया। कोलंबो, पिनांग, सिंगापुर, हाँगकाँग, नागासाकी, ओसाका, टोकियो आदि बड़े नगरों को देखते हुए स्वामीजी अमरीका के बैंकोवर बंदरगाह पर उतरे। वहाँ से रेल द्वारा शिकागो पहुँच गए।

स्वामीजी जुलाई के आरंभ में अमरीका पहुँच गए थे। वहाँ उनको मालूम हुआ कि सभा सितंबर में होने वाली है। इतने समय तक शिकागो जैसे खर्चीले शहर में होटल में रहने लायक धन स्वामीजी के पास न था। यह भी कहा गया कि किसी प्रसिद्ध संस्था के प्रमाण-पत्र के बिना ये धर्म-सभा के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार नहीं किए जा सकते। कुछ दिन बाद कम खर्च की निगाह से बोल्टन चले गए। रास्ते में एक भद्र महिला से परिचय हो गया, जिसने आग्रहपूर्वक उनको

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने घर ठहरा लिया। पर उस शहर में अपनी पोशाक के कारण उन्हें असुविधा होने लगी । विचित्र ढंग का गेरुआ लबादा और फेंटा देखकर मार्ग में अनेक व्यक्ति और लड़के एक तमाशा समझकर उनके पीछे लग जाते और ''हुर्रे-हर्रे'' का शोर मचाने लगते। इस दिक्कत से बचने के लिए उस महिला ने उनको सलाह दी कि सामान्यत: आप यहीं की पोशाक पहिना कीजिए। स्वामीजी संन्यासी होने पर भी रूढ़ियों के गुलाम नहीं थे और उद्देश्य की सिद्धि के लिए इस प्रकार के बाह्य परिवर्तन में उनको कुछ भी एतराज न था। पर कठिनाई यह थी कि अब उनके पास अधिक रुपया नहीं बचा था। इससे वे धैर्यपूर्वक कठिनाइयों को सहन करके दिन बिताने लगे। इतने में स्त्रियों की एक संस्था ने उनको अपने यहाँ व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया। उस भाषण से जो आय हुई उनसे स्वामीजी के लिए अमरीकन पोशाक बन गई और तबसे उन्होंने गेरुआ वस्त्रों को केवल भाषण के समय के लिए रख दिया।

फिर भी उनकी कठिनाइयों का अंत न हुआ और शिकागो वापस आने पर एक दिन उनको स्टेशन के बाहर पड़ी खाली पेटी के भीतर सारी रात काटनी पड़ी। फिर भी उनका धैर्य सहायक बना रहा और सब तरह की बाधाओं को पार करके वे 'धर्म-सभा' के अधिवेशन में प्रतिनिधि रूप में सम्मिलित होने में सफल हो गए।

सर्व धर्म-सम्मेलन

सन् १८९३ की ११वीं सितंबर को सर्व धर्म-सम्मेलन का उद्घाटन हुआ। संसार भर के विभिन्न देशों के प्रतिनिधि तथा शहर के बहुसंख्यक प्रतिष्ठित व्यक्ति 'आर्ट पैलेस' (कला मंदिर) के विशाल हाल में एकत्रित हुए। प्रत्येक प्रतिनिधि अपने-अपने धर्म की महत्ता सिद्ध करने को उत्सुक था और इस उद्देश्य से कई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिनों से अधिक से अधिक प्रभावशाली भाषण देने की तैयारी कर रहा था। पर स्वामीजी को अभी तक इस प्रकार की तैयारी कर सकने की सुविधा नहीं मिल सकी थी और सभा में वे सबसे पीछे बैठे ईश्वर-चिंतन में संलग्न थे।

अंत में दस का घंटा बजा। ईसाई पादरी अनुभव करने लगे कि जगत में ईसाई धर्म सर्वश्रेष्ठ है—इस तथ्य को दुनिया के सामने प्रकट करने का समय आ पहुँचा और वास्तव में इसी भावना से अमरीका के बड़े धार्मिक नेताओं ने इस महा-सम्मेलन का आयोजन किया था। परंतु किसी को खबर न थी कि यह घंटा तो सनातन हिंदू-धर्म की विजय का बज रहा है। वहाँ स्वामीजी को कैसा अनुभव हुआ यह उन्हीं के शब्दों में सुनिए—

''मंच के ऊपर संसार के सब देशों के चुने हुए विद्वान और व्याख्यानदाता बैठे थे। मैंने अपने जीवन में न कभी ऐसी विशाल सभा देखी थी और न ऐसे उत्कृष्ट जन-समूह के सम्मुख भाषण किया था। संगीत और शिष्टाचार के भाषणों के उपरांत सब प्रतिनिधियों का एक-एक करके परिचय दिया जाने लगा और वे भी संक्षेप में अपना मंतव्य प्रकट करने लगे। मेरा तो हृदय धड़कने लगा और जीभ सूखकर लगभग बंद हो गई। प्रातःकाल के समय तो मैं बोलने की हिम्मत ही न कर सका। सभा-अध्यक्ष ने मुझसे कई बार बोलने को कहा पर मैं यही उत्तर देता रहा—'अभी नहीं।' इससे सभा-अध्यक्ष भी मेरी तरफ से कुछ निराश हो गया। अतः दोपहर के अंतिम भाग में सभाध्यक्ष ने बहुत उत्साहपूर्ण शब्दों में आग्रह किया तो मैं उठकर आगे आया और मेरा परिचय दिया गया।''

अध्यक्ष द्वारा परिचय समाप्त हुआ और स्वामीजी आँख बंद करके ध्यान करने लगे। उनको अपने पीछे खड़े और आशीर्वाद देते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हुए परमहंस देव के दर्शन हुए। बस, स्वामीजी का चेहरा दैवी तेज से दीप्त हो उठा और उसमें एक अद्‌भुत शक्ति जागृत हो गई। श्री गुरुदेव और सरस्वती को प्रणाम करके उन्होंने बोलना आरंभ किया—''भाइयो और बहिनो!''

इन 'भाइयो और बहिनो' शब्दों को सुनते हुए सभा में उत्साह का तूफान आ गया। सबके मुख से 'लेडिज और जैंटिलमैन' के बाह्य शिष्टाचार-युक्त संबोधन को सुनते-सुनते जब उनके कानों में ये 'भाइयो और बहिनो' के आत्मीयतापूर्ण शब्द पड़े तो हजारों व्यक्ति जोश से तालियाँ बजाते खड़े हो गए। स्वामीजी स्वयं चकित रह गए। कई मिनट तक तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई देती रही।

अंत में लोगों के शांत होने पर स्वामीजी ने कहा—''मुझे यह कहते हुए गर्व है कि जिस धर्म का मैं अनुयायी हूँ उसने जगत को उदारता और प्राणी मात्र को अपना समझने की भावना दिखलाई है। इतना ही नहीं हम सब धर्मों को सच्चा मानते हैं और हमारे पूर्वजों ने प्राचीन काल में भी प्रत्येक अन्याय पीड़ित को आश्रय दिया है। जब रोमन साम्राज्य के जुल्मों से यहूदियों का नाश हुआ और बचे खुचे लोग दक्षिण भारत में पहुँचे तो उनके साथ पूर्ण सहानुभूति का व्यवहार किया गया। इसी प्रकार ईरान के पारसियों को भी आश्रय दिया गया और वे आज भी गौरव के साथ वहाँ निवास कर रहे हैं। मैं छोटेपन से नित्य कुछ श्लोकों का पाठ करता हूँ, अन्य लाखों हिंदू भी नियम से उनका पाठ करते हैं। उनमें कहा गया है—''जिस प्रकार भिन्न-भिन्न स्थानों से उत्पन्न नदियाँ अंत में एक समुद्र में ही इकट्ठी होती हैं उसी प्रकार हे प्रभु! मनुष्य अपनी भिन्न-भिन्न प्रकृति के अनुकूल पृथक-पृथक जान पड़ने वाले मार्गों से अंत में तेरे ही पास पहुँचते हैं।''

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

''ऐसी विराट सर्व धर्म-सभा पहले कभी नहीं की गई थी और यह गीता के सिद्धांतों का प्रत्यक्ष प्रमाण है। गीताकार ने कहा है—'मेरे पास कोई भी व्यक्ति चाहे जिस तरह से आवे, तो भी मैं उससे मिलता हूँ। लोग जिन भिन्न-भिन्न मार्गों से अग्रसर होने का प्रयत्न कर रहे हैं, वे सब रास्ते अंत में मुझमें ही मिल जाते हैं।' पंथ संबंधी द्वेष धर्मांधता और इनसे उत्पन्न क्रूरतापूर्ण पागलपन—ये सब इस सुंदर धरती को चिरकाल से नष्ट कर रहे हैं। इन बातों ने पृथ्वी पर तरह-तरह के अत्याचार कराए हैं, बार-बार भूमि को मानव रक्त से सिंचित किया, संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है और सब लोगों को निराशा की खाई में धकेल दिया है। अगर ये क्रूर दैत्य न होते तो मानव-समाज न जाने अब तक कितनी अधिक प्रगति कर चुका होता। पर अब इन बातों का समय पूरा हो चुका है और मैं अपने हृदय में यही आशा करता हूँ कि आज प्रातःकाल इस सभा के स्वागतार्थ जो घंटा बजा था, वह एक ही लक्ष्य (ईश्वर) की तरफ जाने वाले मानव-समूह में उत्पन्न हो गई सब तरह की अनुदारता, संकीर्णता और तलवार तथा कलम द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों का अंत करने वाला 'मृत्यु-घंट' सिद्ध होगा।''

इतने संक्षिप्त भाषण द्वारा 'हिंदू-धर्म' में निहित विश्वव्यापी एकता के तत्त्व और उसकी विशालता का परिचय करा देने से समस्त सभा स्वामीजी पर मोहित हो गई और जैसे ही वे अपना कथन समाप्त करके बैठे समस्त सभा ने उनकी प्रशंसा में पुनः जयध्वनि की।

मूर्तिपूजा की उपयोगिता

इसके एक सप्ताह बाद स्वामीजी ने अपना 'हिंदू-धर्म' नाम का निबंध धर्म-सभा के सम्मुख पढ़ा, जो कुछ ही समय में संसार में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रसिद्ध हो गया। इसके आरंभ में उन्होंने अद्वैत सिद्धांत का वह रहस्य बतलाया जहाँ आधुनिक विज्ञान क्रमशः पहुँचता जा रहा है। उसके पश्चात उन्होंने अनेक देवी देवताओं की उपासना और मूर्ति पूजा की उस प्रथा पर प्रकाश डाला जिसके लिए उसके विरोधी तरह-तरह के आक्षेप करते रहते हैं। उन्होंने कहा—

''पूजा, उपासना, कर्मकांड आदि के धार्मिक विधि-विधान दूसरी श्रेणी के हैं और ये साधारण मनुष्यों की चित्त-शुद्धि के लिए आवश्यक हैं। इसी प्रकार मूर्तिपूजा मनुष्य की आध्यात्मिक एकाग्रता के लिए आवश्यक है। जब प्रतिमा को ईश्वर के प्रतीक के रूप में पूजा जाता है तो उसे 'पत्थर पूजा' नहीं कहा जा सकता है। हिंदुओं का विश्वास है कि किसी सिद्धांत के मानने या न मानने पर धर्म का आधार नहीं है, पर धर्म का उद्देश्य है—ईश्वर का साक्षात्कार। इस दृष्टि से देखने पर साकार पूजा और कर्मकांड, आध्यात्मिक जीवन के आरंभिक आधार माने जाते हैं। पर यह आधार या सहायता प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य हैं, ऐसा हिंदू धर्म में कहीं भी नहीं कहा गया है। बाहरी दृष्टि से जो विविधता दिखाई पड़ती रही है, उसी में एकता का समावेश हो रहा है। विश्वव्यापी धर्म उसी को कहा जा सकता है जो किसी विशेष पथ से बँधा हुआ न हो और जिसमें जंगली मनुष्य से लेकर सुसंस्कृत मनुष्य तक की भावनाओं की पूर्ति हो सके और उस महान समन्वय में प्रत्येक श्रेणी के व्यक्ति अपने-अपने अनुकूल मार्ग से चलकर एक ध्येय पर पहुँच सकें।''

स्वामीजी के इन आरंभिक भाषणों ने उनकी श्रेष्ठता की छाप समस्त धर्मों के अधिकांश प्रतिनिधियों और अमरीकन श्रोताओं के ऊपर लगा दी। संसार भर के और विशेषतः अमरीका के प्रमुख पत्रों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में उनकी प्रशंसा में कालम के कालम रंगे जाने लगे। उस देश में सर्वाधिक प्रचारित 'न्यूयार्क हेरल्ड' ने लिखा है कि ''शिकागो धर्म सभा में विवेकानंद ही सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हैं। उनका भाषण सुनकर ऐसा लगता है कि ऐसे उच्चश्रेणी के देश (अर्थात भारत) में ईसाई-धर्म प्रचारकों का भेजना बिलकुल मूर्खता है।'' दूसरे ''दि प्रेस ऑफ अमरीका'' ने टिप्पणी की—''स्वामी विवेकानंद धर्म-सभा में उपस्थित सभासदों में अग्रगण्य हैं। उन्होंने संपूर्ण मंडली को मानो सम्मोहिनी शक्ति द्वारा मुग्ध कर रखा था। वहाँ पर प्रत्येक ईसाई चर्च के प्रतिनिधिगण उपस्थित थे, पर स्वामीजी के भाषणों की आँधी में उनके वक्तव्य न जाने कहाँ उड़ गए। उनके ज्ञान-प्रदीप्त मुख मंडल से निकले हुए भाषण प्रवाह ने अंग्रेजी भाषा की मधुरता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करके धर्म तत्त्वों को श्रोताओं के हृदय पर गंभीरता के साथ अंकित कर दिया।''

इस प्रकार स्वामीजी ने 'धर्म-सभा' के १७ दिन के अधिवेशन में हिंदू-धर्म की वह सेवा कर दिखाई जिसको सहस्रों बड़े-बड़े माला, तिलक और त्रिपुंडधारी मिलकर भी आजीवन न कर सके थे। उस समय पचास-साठ वर्ष से हिंदू-धर्म पर ईसाई पादरियों का आक्रमण हो रहा था। उनके सर्वसाधन संपन्न अनथक प्रचार और सरकारी सहायता से देश में हिंदू धर्म की नींव हिलने लगीं थी और लाखों नव-शिक्षित सुयोग्य व्यक्तियों का झुकाव ईसाइयत की तरफ होता जाता था, पुराने ढंग के साधु संन्यासी और पंडित इन लोगों को बुरा-भला तो कहते थे, पर किसी से यह नहीं बनता था कि विदेशी धर्म के इस प्रबल प्रवाह के सम्मुख खम ठोककर खड़ा हो जाए। स्वामी विवेकानंद ने ईसाई धर्म प्रचारकों के भीतर घुसकर उनकी सारी किलेबंदी को चूर-चूर कर दिया और उनके ऊँचे महल के ऊपर हिंदू-धर्म की ध्वजा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फहरा दी। इनका परिणाम संसार भर में हिंदू-धर्म की मान-मर्यादा बढ़ जाना तो हुआ ही भारतीय शिक्षित जनों की आँखें भी खुल गईं और वे समझने लगे कि हम विदेशियों के भुलावे में पड़कर व्यर्थ ही अपने मणि-माणिकों को त्याग उनके चमकीले किंतु नकली नगों के ऊपर लट्टू हो रहे थे। यह एक ऐसी सफलता थी जिसके लिए हिंदू समाज स्वामीजी का चिरऋणी रहेगा।

स्वामीजी की सफलता और बाहरी दुनिया पर उनके अप्रत्याशित प्रभाव से ईसाई मिशनरी जल-भुन गए और उसी समय उनके विरुद्ध वे-सिर पैर की बातें कहकर उनको बदनाम करने की चेष्टा करने लगे। उन्होंने कहा—''विवेकानंद ने हिंदू धर्म की जो व्याख्या की है और जिस प्रकार आत्मा की महिमा घोषित की है वर्तमान प्रचलित हिंदू-धर्म में कहीं दिखाई नहीं देती। वे सूक्ष्म तर्क व युक्ति द्वारा मूर्तिपूजा की दार्शनिक व्याख्या करके पाश्चात्य जगत की आँखों में धूल झोंकने को उद्यत हुए हैं, क्योंकि जड़ की उपासना करने वाले मूर्तिपूजक हिंदू उस प्रकार की विचारधारा स्वप्न में भी नहीं सोच सकते। विशेषत: विवेकानंद एक कायस्थ परिवार में पैदा हुए हैं और हिंदू शास्त्रों के अनुसार धर्म-चर्चा उनके लिए अनाधिकार चेष्टा है।'' इस तरह अनेक निंदा-कुत्साहपूर्ण प्रलाप करके उन्होंने 'धर्म-सभा' के अधिकारियों को सलाह दी कि ''इस उच्छृंखल, चरित्रहीन युवक को सभा से निकाल दिया जाए।'' उन अधिकारियों ने ऐसे स्वार्थी व्यक्तियों की द्वेषपूर्ण बातों पर विश्वास तो नहीं किया पर स्वामीजी को यह संकेत अवश्य किया कि आप विरोधियों द्वारा उठाई गई आपत्तियों का खंडन कीजिए।

दूसरे दिन स्वामीजी ने हिंदू-धर्म का सार विषय पर भाषण दिया और बोलते-बोलते वे एकाएक चुप हो गए। तब उन्होंने उपस्थित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जन-समूह को लक्ष्य करके प्रश्न किया—"इस सभा में जो सज्जन हिंदू-धर्म व शास्त्रों से प्रत्यक्ष रूप से परिचित हैं वे अपने हाथ उठाएँ!" सात हजार के विद्वत-समूह में से केवल तीन-चार हाथ ऊपर उठे। इस पर स्वामीजी ने, जिन्हें बाद में अनेक अमरीकन 'योद्धा संन्यासी' कहने लगे थे, मस्तक ऊँचा उठाकर दोनों बाहों को दृढ़तापूर्वक छाती के सामने लाकर गरजते हुए कहा—"इसी जानकारी पर तुम हमारे धर्म की आलोचना करने का साहस करते हो!" समस्त सभा निर्वाक और स्तब्ध रह गई।

अंत में २७ सितंबर को धर्म-सभा के अंतिम अधिवेशन में स्वामीजी ने वज्र कंठ से घोषणा की—"इस धर्म-सभा ने अगर संसार के सम्मुख कोई महत्त्वपूर्ण तथ्य प्रकट किया है तो वह यही है कि पवित्रता, चरित्र की उदारता किसी एक धर्म की मिल्कियत नहीं है। प्रत्येक धर्म में चरित्रवान स्त्री-पुरुष उत्पन्न हुए हैं। इस सत्य के होते हुए भी यदि किसी धर्म के नेता हृदय में ऐसी भावना रखते हों कि उनका धर्म ही स्थिर रहेगा और बाकी सब नष्ट हो जाएँगे, तो मैं उन्हें दया का पात्र समझता हूँ। मैं उनको बतला देना चाहता हूँ कि उनके ईर्ष्या-द्वेष के होते हुए भी कुछ समय के भीतर प्रत्येक धर्म के झंडे पर यही शब्द लिखे जाएँगे—संघर्ष नहीं वरन पारस्परिक सहयोग, विध्वंस नहीं वरन एकता, विरोध नहीं वरन समन्वय और शांति।"

विश्व-विख्यात विवेकानंद

धर्म सभा का अधिवेशन समाप्त हो गया। भारतवर्ष का यह अज्ञात, अकेला भटकता परिव्राजक धर्म की नवीन व्याख्या करने वाले पैगंबर के रूप में जगत विख्यात हो गया। चारों दिशाओं में 'विवेकानंद' छपा था। रास्ता चलते अनेक लोग चित्र के सामने खड़े

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होकर सम्मान प्रदर्शित करते थे। बड़े-बड़े धनकुबेर उन्हें अपने महलों में रहने का निमंत्रण देने लगे। स्वामीजी एक भक्त के विशेष आग्रह से उसके मकान पर जाकर ठहर गए। पर इस बड़े राजाओं के-से ठाट-बाट वाले महल में रहने से उन्हें सुख के बजाय दुःख का ही अनुभव होता था, प्रथम रात्रि को ही वे फूट-फूटकर रो पड़े। भारतवर्ष की घोर कंगाली और दुर्दशा उनके सामने मूर्तिमय होकर खड़ी हो गई। उसके साथ अमरीका की श्रीमन्ताई की तुलना करने पर वह कोमल शैया उनको काँटों की तरह गड़ने लगी। रोते-रोते वे बेसुध हो गए और कहने लगे—

''माँ! जब मेरी जन्मभूमि गरीबी में पड़ी हुई सिसक रही है, तब मैं इस नाम और यश को लेकर क्या करूँगा? हम भारतवासी किस अवस्था को प्राप्त हो गए हैं? हमारे देश में लाखों अभागे एक मुट्ठी अनाज के बिना मर जाते हैं, जबकि यहाँ केवल ऊपरी शान-शौकत के लिए लाखों करोड़ों धन पानी की तरह बहा दिया जाता है। भारत के गरीबों का उद्धार कौन करेगा? मुझे वह रास्ता दिखला जिससे मैं उनकी सहायता कर सकूँ।''

स्वामीजी के ये उद्‌गार सिद्ध करते हैं कि वे सच्चे महामानव थे। यश और वैभव पाने पर भी जो अपने भाग्यहीन भाइयों की याद न भूले और उनके कष्टों को अपने ऊपर पड़ने वाले कष्टों के समान ही अनुभव करे वही असली 'संत' अथवा 'साधु' माना जा सकता है। अन्यथा केवल कपड़ा रंग लेने अथवा छापा-तिलक लगा लेने वाले नामधारी तो लाखों दिखाई पड़ रहे हैं, पर उनके द्वारा धर्म का उद्धार तो दूर रहा उल्टा दिन पर दिन पतन होता जा रहा है।

शीघ्र ही अमरीका की 'एक व्याख्यान संस्था' ने स्वामीजी को समस्त अमरीका में व्याख्यान देने का निमंत्रण दिया। यह एक व्यावसायिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ढंग पर काम करने वाली संस्था थी। स्वामीजी ने सोचा कि यह इस देश में अपने विचार फैलाने का सबसे सुगम तरीका है। इससे जो धन प्राप्त होगा उससे भारतवर्ष के अनेक लोकोपकारी कार्यों में सहायता की जा सकेगी। उन्होंने इस व्यवस्था के अनुसार अनेक शहरों में जाकर भारतीय संस्कृति और हिंदू-धर्म पर भाषण दिए।

इन भाषणों से एक बहुत बड़ा लाभ यह हुआ कि अमरीका निवासियों को भारतवर्ष की स्थिति की वास्तविक जानकारी होने लगी। इसके पहिले वे केवल ईसाई पादरियों की उल्टी-सीधी बातें सुनकर भारतवर्ष को बहुत गिरा हुआ और पतित देश मानने लग गए थे। इसी प्रकार मनगढ़ंत बातें सुनाकर पादरी लोग भारत में अपने धर्म-प्रचार के नाम पर अमरीकनों से करोड़ों रुपया दानस्वरूप प्राप्त किया करते थे। अब इन भाषणों से लोगों की आँखें खुलने लगीं। स्वामीजी ईसा के प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखते थे, पर वर्तमान ईसाई-सभ्यता के दोषों को खोलने में किसी की परवाह नहीं करते थे। उदाहरणार्थ उनके एक भाषण का, जो 'डेट्राइट' नगर में फरवरी १८९४ में दिया गया था, एक अंश इस प्रकार था—

"एक बात मैं तुमसे कहूँ, यद्यपि किसी की झूँठी आलोचना करने का मेरा तनिक भी विचार नहीं है। तुम अपने यहाँ के लोगों को पढ़ा लिखाकर और पादरी बनाकर अच्छा वेतन क्यों देते हो? क्या इसका उद्देश्य यह है कि वे मेरे देश में आकर मेरे बाप-दादा, मेरे धर्म, मेरे सभी कार्यों की निंदा करें, गालियाँ दें? हमारे मंदिरों के पास से निकलते हुए ये पादरी कहने लग जाते हैं—"ऐ पत्थर-पूजको ! तुम नरक में डाले जाओगे।" हिंदू शांत और गंभीर स्वभाव के हैं, वे ऐसी हँसकर टाल देते हैं और 'मूर्ख लोग इसी तरह बकते हैं, यह कहकर मुँह फेर लेते हैं। तुम हमको गालियाँ देने और आलोचना करने के लिए ही पादरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तैयार करते हो तो तुम्हारी मर्जी, हमें उसकी कुछ चिंता नहीं। पर मैं जब सदुद्देश्य से भी तुम लोगों की कड़ी आलोचना करता हूँ तो तुम बिगड़ कर चिल्लाने लगते हो—हमसे मत बोलना, हम तो अमरीकन हैं। हम चाहे दुनिया भर के गैर ईसाई लोगों की आलोचना क्यों न करें, पर तुम हमसे मत बोलना। हम तो लजवंती के पौधे हैं।''

''मैं कहता हूँ तुम्हारा धर्म तुमको मुबारक, पर हमको भी अपना धर्म पालने दो। तुमको चाहे कुछ कड़वा लगे, तो भी मैं कह देना चाहता हूँ कि जिस ईसाई सदाचार और पंथ की महत्ता के इतने गीत तुम गाते हो, वह पूर्णत: बौद्ध धर्म से लिया गया है, उन्हीं के प्रचारकों ने तुमको इसे सिखलाया है। पर किस तरह से! खून की एक भी बूँद गिराए बिना। पर तुम्हारा ईसाई धर्म कहीं भी तलवार के बिना नहीं फैला है। मुझे तुम संसार में एक भी केवल एक ही उदाहरण ऐसा बतला दो, जहाँ यह बिना जोर-जबर्दस्ती के फैलाया गया हो। इसका अर्थ यह हुआ कि तुम समझते हो कि दुनिया में बस हम ही श्रेष्ठ, हैं क्योंकि हम मार सकते हैं। अरब वाले भी ऐसा ही कहते थे, ऐसी ही शेखी मारते थे, पर आज वे किस अवस्था में हैं? वहाँ केवल रेगिस्तान में भटकने वाले बद्दू ही दिखाई पड़ते हैं। रोमन लोग भी ऐसे ही बड़प्पन का दम भरते थे, पर आज कहीं उनका चिन्ह भी शेष है? और हम हिंदू लोग तो जहाँ के तहाँ अपनी मजबूत पत्थर की शिलाओं पर बैठे हुए हैं।''

''स्मरण करो जिस किसी वस्तु का आधार स्वार्थ पर है, जिसके साधनों में द्वेषभाव है, जिसका उद्देश्य इद्रिंय सुख है, उस प्रत्येक वस्तु का जल्दी या देर में विनाश होना निश्चित है। तुमको जीवित रहना है तो ईसा की तरफ लौटो। तुम इस समय ईसाई नहीं रहे। ईसा को कहीं बैठने को हाथ भर जमीन भी नहीं मिलती थी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और तुम धर्म के नाम पर विलासिता का उपदेश दे रहे हो। ईश्वर और भजकलदारम—इन दोनों की सेवा एक साथ नहीं हो सकती। क्या यह सब विलास और तलवार की धमकी ईसा के उपदेशों के अनुसार है? यदि आज वह जीवित होते तो इस झूठी शान को अवश्य ही अस्वीकार कर देते।''

ऐसे भाषणों से ईसाई पादरियों के पेट में तो चूहे कूदने लगे। स्वामीजी के कार्य का स्पष्ट परिणाम उनको यह दिखाई पड़ रहा था कि 'ईसाई धर्म प्रचारिणी संस्था' की आमदनी पहले से आधी रह गई थी। अमरीका के बहुसंख्यक व्यक्तियों ने पादरियों को पहले की तरह सम्मान की दृष्टि से देखना छोड़ दिया था। इसलिए वहाँ के प्रमुख धर्म-नेता स्वामीजी के विरुद्ध झूँठी, सच्ची और सर्वथा निराधार बातें लिखकर उनको बदनाम करने की चेष्टा करने लगे। इतना ही नहीं उन्होंने कई अत्यंत सुंदरी रमणियों को बहुत-सा रुपया देकर इसलिए भेजा कि वे स्वामीजी का चरित्र-भ्रष्ट कर दें। ऐसा काम आजकल धर्म के नाम पर हो सकता है, इस पर जल्दी विश्वास नहीं होता, पर ये सब बातें नग्न सत्य हैं। किंतु भारतीय साधकों के स्वर्ग की अफसराओं द्वारा न बहकाए जा सकने की कथाओं के ज्ञाता स्वामीजी ने उन कामनियों को दूर से ही प्रणाम कर लिया।

पादरियों द्वारा हिंदू स्त्रियों के संबंध में फैलाई हुई बातों को सुनकर एक अमरीकन महिला ने स्वामीजी से भाषण के समय पूछा—''स्वामीजी! क्या यह सच है कि हिंदू स्त्रियाँ अपने लड़कों को नदी में मगरमच्छों के सामने फेंक देती हैं?'' स्वामीजी ने व्यंग्य में उत्तर दिया—''हाँ श्रीमतीजी! आपके पादरी ऐसा ही कहते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मुझे भी मेरी माँ ने फेंक दिया था पर मैं बाइबिल में वर्णित 'जोना' की तरह मगर के मुँह से बाहर वापस चला आया।''

इन पादरियों ने बदला लेने के ख्याल से भारतवर्ष में भी स्वामीजी के विरुद्ध झूठा प्रचार करने में कुछ कसर नहीं रखी। कलकत्ता के 'बँगवासी' के समान कुछ ढोंगी ''सनातनधर्मी'' भारतीय पत्र भी उनके विरुद्ध विष वमन करने लगे और पादरियों के स्वर में स्वर मिलाकर उन्हें नीचा गिराने की कुचेष्टा करके कृतघ्नता का परिचय देने लगे। यहाँ के कुछ शिष्य गुरु की निंदा को सुनकर विचलित होने लगे। पहले तो स्वामीजी ने ऐसी मनगढ़ंत बातों पर कुछ ध्यान न दिया पर जब शिष्यगण बार-बार पत्र भेजने लगे तो दो-डेढ़ वर्ष बाद उनको एक पत्र में स्वामीजी ने वास्तविक स्थिति को समझाते हुए रोषपूर्वक लिखा था—

''मुझे आश्चर्य है कि तुम ईसाई पादरियों द्वारा प्रचारित इन मूर्खतापूर्ण बातों को सुनकर विचलित होते हो। अगर भारत के कोई हिंदू मुझे कट्टर हिंदुओं की तरह खान-पान रखने का परामर्श देते हैं तो उनसे कहो कि वे एक ब्राह्मण रसोइया और कुछ धन भेज दें। एक पैसे की सहायता करने की प्रवृत्ति नहीं, परंतु समझदार व्यक्ति की तरह उपदेश देने की खूब योग्यता है, यह देखकर मैं हँसी रोक नहीं सकता। दूसरी ओर यदि ईसाई पादरी कहते हैं कि मैंने 'कामिनी-काँचन' के त्यागरूप महान व्रत को भंग किया है, तो उनसे कह दो कि वे घोर मिथ्यावादी हैं। स्मरण रखो कि मैं किसी के निर्देश पर नहीं चल सकता। अपने जीवन का उद्देश्य मैं भलीभाँति जानता हूँ। किसी प्रकार के हल्ला-गुल्ला और निंदा आदि की मैं परवाह नहीं करता। क्या मैं किसी व्यक्ति या जाति का गुलाम हूँ? मैं सभी प्रकार की कायरता से घृणा करता हूँ। ऐसी झूठी बातें फैलाने वाले कायर पुरुषों तथा राजनीतिक झगड़ों से मेरा कोई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संबंध नहीं। ईश्वर तथा सत्य ही मेरी एकमात्र राजनीति हैं—बाकी जो कुछ है वह सब केवल कूड़ा-करकट है।''

वास्तव में सच्चे महापुरुष ऐसी लोकचर्चा और द्वेष बुद्धि रखने वालों की कटूक्तियों की परवाह नहीं करते, क्योंकि यदि वे ऐसा करें तो उनके जीवन उद्देश्य की हानि होगी। स्वामीजी इस तथ्य को भली प्रकार समझते थे और इसलिए इन दोषयुक्त देशी-विदेशी आलोचकों की तरफ ध्यान न देकर अमरीका में हिंदू धर्म की नींव जमाने का प्रयत्न करने में लगे रहे। उनके विद्वतापूर्ण भाषणों के प्रभाव से कुछ अमरीकन उनके अनुयायी बन गए और नियमित रूप से योग, वेदांत, गीता, उपनिषदों की शिक्षा प्राप्त करने लगे। उनके लिए ब्रुकलीन नगर में एक छोटी-सी शिक्षा संस्था (क्लास) खोली गई। कुछ समय पश्चात दो अमरीकन युवकों तथा एक महिला ने उनसे संन्यास की दीक्षा भी लेली और उनके नाम क्रमशः कृपानंद, अभयानंद और हरिदास रखे गए। अब ये लोग स्वयं ही अमरीकनों में हिंदू-धर्म के उच्च सिद्धांतों का प्रचार करने लगे। जब स्वामीजी अमरीका का कार्य पूरा करके इंगलैंड को चलने लगे तो उन लोगों ने प्रार्थना की आप अपने किसी गुरु भाई को ही यहाँ भेज दें। इस पर स्वामी शारदानंद को वहाँ पर भेज दिया गया। इन सब लोगों के धर्म प्रचार का यह परिणाम हुआ कि न्यूयार्क में एक वेदांत सोसाइटी की स्थापना की गई जिसका प्रचार बाद में अन्य नगरों में भी हो गया। ये संस्थाएँ अभी तक उस देश में कार्य कर रही हैं और इनके द्वारा अमरीकनों में अध्यात्म भावनाओं का प्रचार ही नहीं हुआ, यहाँ की जनता में भारत के प्रति सहानुभूति भी उत्पन्न हो गई, जिससे भारत को पर्याप्त सहायता मिली है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वामीजी का इंग्लैंड में प्रचार कार्य

अमरीका में धर्म-प्रचार का कार्य भलीभाँति जम जाने पर स्वामीजी इंग्लैंड आए। उस समय भारतवर्ष इंग्लैंड के अधीन था और यहाँ के निवासी चाहे वे राजा हों अथवा रंक, वहाँ पर प्रजा की तरह ही माने जाते थे। स्वामीजी इंग्लैंड में भी अपनी योग्यता द्वारा भारतवर्ष और हिंदू-धर्म की श्रेष्ठता का प्रभाव स्थापित करना चाहते थे। दो-चार दिन में ही वे लंदन में 'हिंदू-योगी' के नाम से प्रसिद्ध हो गए और बड़े-बड़े विद्वान तथा शिक्षित लोग उनके उपदेश सुनने को आने लगे। एक दिन उनका भाषण 'पिकेडली प्रिंसेस हाल' में हुआ जिसमें अध्यात्म विषयों में रुचि रखने वाले एक हजार से अधिक श्रोता उपस्थित थे। दूसरे दिन लंदन के सभी समाचार पत्रों में इनकी विद्वता के विषय में बड़े-बड़े लेख प्रकाशित हुए। 'स्टैंडर्ड' नामक प्रसिद्ध पत्र ने लिखा कि "बहुत दिनों से कोई ऐसा शक्तिशाली भारतीय इंग्लैंड के व्याख्यान-मंच पर खड़ा नहीं हुआ था। स्वामीजी ने बतलाया कि हमारे कारखाने, इंजन, वैज्ञानिक आविष्कार तथा पुस्तकों द्वारा जितना उपकार हुआ है उससे अधिक खराबी भी हुई है। उन्होंने इस तथ्य की बुद्ध व ईसामसीह की वाणियों के साथ तुलना करके आधुनिक सभ्यता की तीव्र आलोचना की।" 'क्रानिकल' नाम के पत्र के संपादक ने लिखा—"लोकप्रिय हिंदू संन्यासी विवेकानंद के अंग-प्रत्यंगों में बुद्धदेव का सादृश्य दिखलाई पड़ता है। वाणिज्य द्वारा प्राप्त हमारी समृद्धि, हमारे रक्त पिपासापूर्ण युद्ध तथा धर्म-प्रचार संबंधी असहिष्णुता की खरी आलोचना करके उन्होंने कहा—"इस मूल्य में बेचारे हिंदू तुम्हारी खोखली, आडंबरपूर्ण सभ्यता के प्रेमी न बन सकेंगे।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्होंने वहाँ पर अनेक भाषणों में बार-बार लोगों को चेतावनी दी कि ''यदि शीघ्र उन्नति करने वाली और ऊपर से मनोहर दिखाई पड़ने वाली पश्चिमी-सभ्यता को वेदांत के त्याग और वैराग्य की नींव पर स्थापित न किया गया तो उसका उतना ही शीघ्र नाश होना भी अवश्यंभावी है। सावधान! सारा पश्चिमी जगत एक ज्वालामुखी के ऊपर टिका हुआ है। वह किसी भी समय आग उगल कर तुम्हारा विध्वंस कर सकता है। अब भी तुम न चेतोगे तो पचास वर्ष में सर्वनाश का दृश्य दिखलाई देगा।'' कहना न होगा सन् १८९६ में कही गई यह भविष्यवाणी गत दो महायुद्धों के रूप में पूर्णतः सत्य हो चुकी है।

इंग्लैंड में स्वामीजी की भेंट प्रोफेसर मैक्समूलर से भी हुई, जिन्होंने अपना समस्त जीवन लगाकर वेदों को खोजकर प्रकाशित करने का महान कार्य किया था। उनके दर्शन करके स्वामीजी ने लिखा कि ''सत्तर वर्ष के वृद्ध प्रोफसर के मुख से आध्यात्मिकता का भाव स्पष्ट प्रकट होता था और श्वेत बालों से युक्त वे एक ऋषि की तरह ही जान पड़ते थे। उनके निवास स्थान की सादगी, वृक्षावली, पुष्प और प्राकृतिक वातावरण भारत के ऋषि-आश्रमों की याद दिलाता था।'' स्वामीजी के विदा होते समय आँधी, वर्षा के होते हुए भी वृद्ध प्रोफेसर उनको पहुँचाने स्टेशन तक आए। जब स्वामीजी ने इसके लिए संकोच का भाव प्रकट किया तो वे कहने लगे—''श्रीरामकृष्ण के योग्यतम शिष्य का दर्शन सदैव प्राप्त नहीं होता।''

जर्मनी के प्रसिद्ध वेदांत ज्ञाता प्रोफेसर पाल ड्यूसन ने स्वामीजी को निमंत्रण भेजकर अपने यहाँ बुलाया और कई दिन तक उन्हें अपने पास रखकर ज्ञान-चर्चा की। वहाँ एक दिन किसी काव्य-ग्रंथ को पढ़ते हुए वे ऐसे तल्लीन हो गए कि प्रोफेसर के बुलाने पर भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुछ उत्तर न दे सके। बाद में जब उनको यह बात मालूम हो गई तो उनसे क्षमा माँगी। पर प्रोफेसर का संदेह दूर नहीं हुआ। इस पर स्वामीजी इस पुस्तक के पृष्ठ बिना पुस्तक देखे ज्यों के त्यों सुनाते चले गए तो उनको इनके गंभीर मनोयोग और अपूर्व स्मरण-शक्ति पर विश्वास हुआ।

भारत-आगमन

इस प्रकार लगभग चार वर्ष तक योरोप-अमेरिका में हिंदू-धर्म की ध्वजा फहराकर तथा हजारों पश्चिमी लोगों को वेदांत और भारतीय अध्यात्म का अनुयायी बनाकर स्वामीजी ने स्वदेश वापस आने का निश्चय किया। उस समय इंग्लैंड के वेदांत प्रेमियों ने कोई अन्य भारतीय शिक्षक वहाँ छोड़ जाने का आग्रह किया तो उन्होंने अपने आश्रम के स्वामी अभेदानंद को इंग्लैंड बुलाकर वहाँ का कार्य-भार उनके सुपुर्द कर दिया। तब १६ दिसंबर १८९६ को स्वामीजी ने भारतवर्ष के लिए प्रस्थान किया। उनके कई शिष्य भी भारतवर्ष के दर्शनों की अभिलाषा रखते थे। उनमें से कप्तान सेवियर और उनकी धर्मपत्नी तथा श्री गुडवीन तो उनके साथ ही रवाना हो गए। मिस मुलर और मिस नोबल (बाद में भगिनी निवेदिता) ने कुछ समय पश्चात आने का विचार प्रकट किया।

चलते समय लंदन के पत्र संवाददाता ने पूछा-"स्वामीजी, इस चमकते-दमकते, विलास-वैभवपूर्ण पश्चिम में चार वर्ष रहने के पश्चात आपको अपना देश कैसा जान पड़ता है?"

स्वामीजी ने कहा—"देखो, यहाँ आने के पहले तो मैं भारतवर्ष से प्रेम ही करता था, पर अब तो वहाँ की धूल और हवा भी मुझे पवित्र करने वाली जान पड़ती है। अब मैं उसे एक तीर्थ के समान समझ रहा हूँ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जहाज की यात्रा करते हुए एक दिन दो पादरी स्वामीजी से विवाद करने आ गए और जब तर्क द्वारा निरुत्तर हो गए तो हिंदू-धर्म को बुरी-बुरी गालियाँ देने लगे। कुछ देर तक तो स्वामीजी ने सहन किया, पर अब उन लोगों ने अति कर दी तो वे उठे और एक पादरी का गला पकड़कर कुछ हँसी के साथ कहा—"अब जो मेरे धर्म को गालियाँ दीं तो उठाकर समुद्र में फेंक ही दूँगा।" विचारा पादरी काँपने लगा और बोला—"महाराज मुझे क्षमा करो, अब कभी ऐसा न करूँगा।" इसके बाद वह जब कभी स्वामीजी को देखता था तो झुककर प्रणाम करता था।

भारत में स्वागत

जिस समय से भारतवर्ष में यह समाचार फैला कि स्वामी विवेकानंद योरोप से भारत के लिए रवाना हो गए तो नगर-नगर में उनके स्वागत और सम्मान के लिए तैयारी की जाने लगी। यहाँ जो लोग चार वर्ष से पश्चिमी देशों में स्वामीजी द्वारा हिंदू-सिद्धांतों के प्रचार के समाचार पढ़ते रहे थे, उनको ऐसा आभास हो रहा था मानो पूर्व युग के किसी महान आचार्य ने ही सनातन धर्म के पुनरुद्धार और संसार में उनकी विजय पताका फहराने के लिए फिर से जन्म लिया है।

जैसे ही स्वामीजी का जहाज कोलंबो में पहुँचा एक बड़े जन-समूह ने बंदरगाह पर ही उनका स्वागत किया। २-३ दिन विभिन्न संस्थाओं की तरफ से उनका स्वागत होता रहा। वहाँ से जब वे राजेश्वर के पास रामानंद पहुँचे तो वहाँ के राजा स्वामीजी को एक गाड़ी में बैठाकर अन्य लोगों के साथ स्वयं खींचकर ले गए। उन्होंने इस घटना के स्मरणार्थ समुद्र के किनारे एक ४० फीट ऊँचा कीर्ति स्तंभ बनवाया जिस पर निम्न लेख लिखा गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

॥ सत्यमेव जयते॥

''पश्चिमी गोलार्द्ध में वेदांत धर्म का परोपकारी प्रचार कार्य, ज्वलंत और अपूर्व विजय प्राप्त करके, अपने अंग्रेज शिष्यों सहित परमपूजनीय स्वामी विवेकानंद ने अपने पवित्र चरणों से सर्वप्रथम जहाँ भारतभूमि को स्पर्श किया, उसी के स्मरण में रामानंद के राजा भास्कर सेतुपति ने यह कीर्ति-स्तंभ खड़ा कराया।''

रामकृष्ण मिशन की स्थापना

इसी प्रकार मद्रास और कलकत्ता में इतनी धूमधाम से सैकड़ों स्वागत-समारोह किए गए कि कई सप्ताह उसी में निकल गए। जब इन सभाओं और भाषणों से छुट्टी मिली तो उन्होंने अपने मुख्य कार्य की ओर ध्यान दिया। अभी तक स्वामीजी के अधिकांश गुरुभाइयों का आदर्श मध्यकाल के संन्यासियों की भाँति सांसारिक विषयों से अलग रहकर कठोर तपस्या और ध्यान द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार करना ही था। पर स्वामीजी ने उसमें एक नया मोड़ देने के उद्देश्य से कहा—''समय की गति को देखते हुए तुम्हें लोगों का मार्ग-दर्शन करना चाहिए। गरीब, निराधार और दुःखी मनुष्यों में ईश्वर का दर्शन करके उनकी सेवा करना, यह अपने उदाहरण से बतलाना चाहिए और दूसरों को वैसा करने की प्रेरणा देनी चाहिए। दूसरों की सहायता और उद्धार के लिए अपना जीवन अर्पण करें, ऐसे संन्यासियों का एक नया संघ भारत में तैयार करना ही मेरा जीवन-कार्य है।''

बहुत कुछ वाद-विवाद, आनाकानी और अनिच्छा के पश्चात अन्य संन्यासी स्वामी जी के इस आदेश को श्री रामकृष्ण की ही प्रेरणा समझकर इस पर सहमत हुए। तदनुसार मई १८९७ में 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की गई। आरंभ में स्वामीजी ही इसके जनरल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रेसीडेंट नियत किए गए। पर बाद में उन्होंने इसकी व्यवस्था के लिए एक ट्रस्ट बना दिया। जब संस्था का कार्य अधिक बढ़ने लगा तो 'रामकृष्ण मिशन' तथा 'रामकृष्ण मठ' की अलग-अलग रजिस्ट्री कर दी गई।

स्वामीजी किसी को धर्म के नाम पर अन्याय, अत्याचार का समर्थन करते देखकर आवेश में आकर उसको कठोर उत्तर दे डालते थे, पर यदि कभी अपनी भूल मालूम पड़ती तो उसे स्वीकार करने में भी आनाकानी नहीं करते थे। ऐसी एक घटना मद्रास में हो गई थी। बंगाल के प्रसिद्ध नेता तथा परमहंस देव के भक्त श्री अश्विनीकुमार दत्त छः वर्ष बाद स्वामीजी से मिले तो विभिन्न विषयों पर बातचीत करते हुए पूछ बैठे—"क्या यह ठीक है कि मद्रास में कुछ ब्राह्मणों ने आपसे कहा था कि तुम शूद्र हो और तुम्हें वेद का उपदेश देने का अधिकार नहीं। इस पर आपने उत्तर दिया—जो मैं शूद्र हूँ तो तुम मद्रास के ब्राह्मण भंगियों के भी भंगी हो।"

स्वामीजी—"हाँ, ऐसा ही हुआ था।"

अश्विनीबाबू—"आप जैसे धर्मोपदेशक और आत्म-निग्रह वाले संत के लिए ऐसा उत्तर देना ठीक था?"

स्वामीजी—"कौन कहता है कि वह ठीक था? उन लोगों की उद्धतता देखकर, मेरा क्रोध अकस्मात भड़क उठा और ऐसे शब्द निकल गए, पर मैं उस कार्य का कभी समर्थन नहीं करता।"

यह सुनकर अश्विनीबाबू ने स्वामीजी को हृदय से लगा लिया और कहा—"आज तुम मेरी दृष्टि में पहले से बहुत महान जान पड़ते हो। अब मुझे मालूम हो गया कि तुम विश्व विजेता कैसे बन गए।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

१८९८ में बेलूर मठ की स्थापना की गई तो उन्होंने श्रीरामकृष्ण के अवशेष वाले ताम्र-कलश को स्वयं कंधे पर उठाया और बड़े जुलूस के साथ उसे मठ के नए मकान में ले गए। रास्ते में उन्होंने कहा—''देखो, ठाकुर ने मुझसे कहा था कि अपने कंधे पर बैठाकर तू मुझे, जहाँ ले जाएगा वहीं पर मैं रहूँगा। इन शब्दों पर श्रद्धा रखकर मैं स्वयं ठाकुर को नए मठ में लेकर चल रहा हूँ। इसलिए यह निश्चित समझ लेना कि जब तक गुरुदेव के नाम पर उनके अनुयायी सच्चरित्रता का व्यवहार करते रहेंगे, तब तक गुरु महाराज यहीं विराजेंगे।''

स्वामीजी का स्वास्थ्य अब बहुत निर्बल होने लग गया था। पर इस दशा में अपने कर्तव्य पालन में किसी प्रकार की कसर नहीं होने दे रहे थे। महापुरुषों की दृष्टि में छोटी या बड़ी उम्र तक जीने का कोई महत्त्व नहीं होता, वे यही चाहते हैं कि जब तक सांस लेते रहें तब तक भगवान का कोई न कोई काम संपन्न करते रहें। इसलिए जब उनका अमरीका से बार-बार बुलावा आया तो वे अस्वस्थ दशा में भी रवाना हो गए। न्यूयार्क पहुँच कर सबसे पहले 'वेदांत सोसायटी' का निरीक्षण किया तो जान पड़ा कि वह निरंतर प्रगति कर रही है और अब उसका निजी स्थान हो गया है। इसके बाद कैलीफोर्निया पहुँचे। वहाँ की आव-हवा से स्वास्थ्य को कुछ लाभ पहुँचा तो भाषणों तथा राजयोग की शिक्षा का कार्य धूमधाम से चलने लगा। जब वहाँ का कार्य पूरा हो चुका तो एक शिष्या मिस 'मिनीबूक' ने १६० एकड़ जमीन वेदांत आश्रम बनाने को दी। स्वामीजी ने उसका कार्यभार स्वामी तुरीयानंद को दिया जिन्हें वे भारतवर्ष से अपने साथ ही ले गए थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन की उपयोगिता कायम रहे

जब ये सब कार्य व्यवस्थित हो गए तो योरोप के कई देशों में होकर सन् १९०० के दिसंबर मास में पुनः भारतवर्ष लौट आए। उन्होंने अपने आने की सूचना किसी के पास नहीं भेजी क्योंकि इससे स्वागत समारोह में फँसना पड़ता और बहुत-सा अमूल्य समय यों ही निकल जाता, जिसे वे ठोस कार्यों में लगाना चाहते थे। अब उनको अनुभव हो रहा था कि इस तूफानी गति से कार्य करते हुए यह पार्थिव शरीर अधिक समय तक नहीं टिकेगा।

इन दिनों उनका स्वास्थ्य प्रायः निर्बल ही रहता था और वे अपना बहुत-सा समय ध्यान में लगा देते थे। तो भी सार्वजनिक सेवा का जो काम आता उसे अवश्य पूरा करते और अपने शिष्यों को भी सदा यही उपदेश देते कि मानव-जीवन का उद्देश्य परोपकार और सेवा ही है। जब तक यह उद्देश्य पूरा हो सके तभी तक जीना यथार्थ है। जब इसकी पूर्ति कर सकने की सामर्थ्य न रहे तो जीवन का अंत हो जाना ही श्रेष्ठ है।

स्वामीजी के इस आदर्श से आजकल के उन साधु-संन्यासियों तथा धर्म-गुरुओं को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए जो अपना कार्य शिष्यों को केवल जबानी उपदेश सुना देना और उनसे प्राप्त दक्षिणा, भेंट द्वारा आराम का जीवन व्यतीत करना ही समझते हैं। यदि भारतवर्ष के हजार-पाँच सौ साधु भी स्वामी विवेकानंद के पद-चिन्हों पर चलते तो आज हिंदू धर्म की हालत कुछ और ही होती।

अब वे मठ के कामों से क्रमशः छुट्टी लेने लगे थे और सब भार अपने गुरु भाइयों तथा शिष्यों पर छोड़ने लगे थे। वे कहते थे कि "अनेक बार ऐसा देखने में आता है कि गुरु अथवा नेता सदैव अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुयायियों के साथ रहकर उनका अहित कर डालता है। सरदार या मुखिया का कर्तव्य है कि जब अन्य लोग कार्य करना जान जाएँ तो स्वयं दूर हटकर रहे, जिससे उन सबका भी पूर्ण विकास हो सके।''

४ जुलाई १९०२ को जिस दिन उन्होंने देहत्याग किया अन्य दिनों की अपेक्षा वे अधिक सक्रिय रहे। प्रात:काल शीघ्र ही उठकर नित्यकर्म से निवृत हुए और पूजा मंदिर में जाकर दरवाजा बंद करके तीन घंटा गुरुदेव तथा काली माता का पूजन और ध्यान करते रहे।

संध्या समय आरती हो जाने पर वे माला लेकर जप करने बैठ गए । कुछ देर बाद उन्होंने एक शिष्य से कहा कि मुझे कुछ गर्मी जान पड़ती है तू मेरे पास बैठकर पंखा करता रह। यह कहकर जमीन पर बिछे बिस्तर पर लेट गए और आँखें बंद करके अर्ध सुषुप्ति की-सी अवस्था में कुछ देर पड़े रहे। लगभग नौ बजे उनका हाथ जरा काँपा उन्होंने एक गहरी साँस ली और प्राण-वायु शरीर से बाहर निकल गया।

रात्रि भर आश्रमवासी इस आशा में बैठे रहे कि शायद स्वामी जी समाधि अवस्था में हों। पर प्रात:काल यह देखकर कि उनके नेत्र लाल हो गए हैं और नाक तथा मुँह से कुछ खून निकला है डॉक्टर को बुलाया। उसने बतलाया कि इनके मस्तक की शिरा फटने से मृत्यु हुई है। शिष्यों ने समझ लिया कि स्वामी जी ने योग विधि से ब्रह्म-रंध्र को भेदकर आत्मा को शरीर से पृथक कर लिया है। तीसरे प्रहर अपार जन-समूह की उपस्थिति में मठ के अहाते में ही एक वृक्ष के नीचे उनका दाह-संस्कार किया गया और हजारों कंठों से एक साथ गगनभेदी स्वर निकला ''गुरु महाराज की जय! हिंदू धर्म की जय!!''



मुद्रक: युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org